REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2022

महात्मा गांधी का आदर्श राज्य या रामराज्य एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

दिनेश कुमार मिश्र
असिस्टेंट प्रोफेसर प्रेम किशन खन्ना राजकीय महाविद्यालय जलालाबाद शाहजहांपुर.

सार –

गांधी जी ने अपने राजनीतिक विचारों में आदर्श राज्य की जो कल्पना की उसी को रामराज्य कहा जाता है गांधीजी राजा रामचंद्र की तरह संचालित शासन व्यवस्था चाहते थे। इस शासन व्यवस्था में उनके द्वारा आदर्श राज्य की विशेषताओं का समावेश किया गया ।गांधीजी राम राज्य शब्द का प्रयोग भावना बस अलंकारिक रूप में किया गया है शाब्दिक अर्थ में नहीं । गांधी जी अपने कल्पित आदर्श शासन व्यवस्था या राम राज्य में कई बातों को शामिल किया ।जैसे सत्य अहिंसा पर आधारित समाज, लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण, मध्य निषेध, नागरिकों के अधिकारों की रक्षा, वर्ण व्यवस्था, अस्पृश्यता का अंत, गायों को वध से बचाना, शराबबंदी, अंतरराष्ट्रीय शांति व निशुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था आदि

प्रस्तावना –

महात्मा गांधी ने प्लेटो के समान दो सामाजिक व्यवस्था का वर्णन किया है ।प्रथम सामाजिक व्यवस्था में राज्य के लिए कोई अस्थान नहीं था जबकि दूसरी सामाजिक व्यवस्था में राज्य को बनाए रखा गया। उन्होंने निश्चय किया कि पूर्ण आदर्श राज्य की व्यवस्था वर्तमान में संभव नहीं है इसलिए उप आदर्श राज्य को अपनाने में बल दिया गया है। उन्होंने अपने आदर्श राज्य को रामराज्य कह कर संबोधित किया।आदर्श राज्य में उन सभी बातों का उल्लेख किया जो राजा रामचंद्र के शासन में थी।

विश्लेषण –

महात्मा गांधी ने अपने आदर्श राज्य में अनेक ऐसी बातों का उल्लेख किया जिससे उनके रामराज्य की भावना को बल मिलता है ।सत्य व अहिंसा उनके जीवन की अटूट विशेषता थी। वह जीवन भर इसके लिए कटिबद्ध रहे ।सत्य के सामने भी किसी बात से समझौता नहीं करते थे। सत्य व ईश्वर में भी कोई अंतर नहीं मानते थे। गांधी जी अपने सत्य के अंतर्गत केवल व्यक्ति को ही नहीं शामिल करते बल्कि समूह, समाज , और संपूर्ण मानव समाज को शामिल करते हैं। वे ईश्वर की पूजा सत्य के रूप में करते थे ।गांधीजी

का मानना था कि अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख का सिद्धांत तो एक हृदयहीन सिद्धांत है जिसने मानवता को बड़ी हानि पहुंचाई है । सर्वोदय जीवन का अंतिम लक्ष्य है। नंगे को वस्त्र दान , भूखे को अन्न दान, और बेघर को आश्रय दान करना सत्य है। गांधी जी सत्य व ईश्वर में कोई अंतर नहीं करते थे। उनका कहना था कि सत्य ही ईश्वर है ।अहिंसा को गांधीजी ने सर्वोच्च स्थान दिया था। अहिंसा के आधार पर ही एक व्यवस्थित समाज की स्थापना की जा सकती है ।गांधी जी ने अहिंसा का अर्थ केवल हत्या करना ही नहीं बल्कि किसी भी प्रकार से व्यक्ति को कष्ट पहुंचाना अहिंसा कहां जाएगा।9 मार्च 1931 के यंग इंडिया में गांधी जी ने लिखा कि पूर्ण अहिंसा सभी प्राणियों के प्रति दुर्भावना के अभाव का नाम है इस प्रकार अहिंसा अपने क्रियात्मक रूप में सभी जीवधारियों के प्रति सद्भावना का नाम है। इस प्रकार उन्होंने कहा कि यदि मनवाणी व कर्म से भी किसी को चोट या हानि पहुंची तो वह हिंसा होगी। कभी-कभी अहिंसा को भ्रमवश मान लिया जाता है कि बुराई के सामने झुक जाना। जबकि इसके विपरीत गांधी जी ने कहा कि अहिंसा का तात्पर्य अत्याचारी का पूर्ण समर्पण नहीं है इसका तात्पर्य अत्याचारी की मनमानी इच्छा का आत्मिक बल के आधार पर प्रतिरोध करना है गांधीजी का साधनों की पवित्रता पर अटूट विश्वास था उन्होंने कहा कि साधन बीज है और साध्य है वृक्ष। इसलिए जो संबंध बीज और वृक्ष में है वही संबंध साधन और साध्य में है। गांधीजी अपने आदर्श राज्य या राम राज्य में व्यक्ति की नैतिकता पर जोर दिए। उन्होंने कहा कि अहिंसा की अवधारणा मनसा वाचा कर्मणा पर आधारित है। इसी तरह मनुष्य की राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक समस्याएं मूल रूप में नैतिक समस्याएं ही हैं और उनका समाधान भी नैतिक साधनों से ही किया जाना चाहिए।

गांधी जी ने अपने आदर्श राज्य में लोकतंत्र को सर्वोच्च स्थान दिया। उन्होंने कहा कि शासन का रूप पूरी तरह लोकतांत्रिक होना चाहिए ।जनता को मत देने का अधिकार होना चाहिए। शासन सत्ता जनता के प्रति उत्तरदाई होना चाहिए ।इसी तरह उन्होंने आर्थिक क्षेत्र में विकेंद्रीकरण की बात की ।बड़े-बड़े केंद्रीकृत उद्योग लगभग समाप्त कर दिए जाएं और उनके स्थान पर कुटीर उद्योग धंधे चलाए जाए। मानवीय श्रम को शोषण का साधन नहीं बनाया जाना चाहिए। गांधीजी राज्य द्वारा नियंत्रित अर्थव्यवस्था के समर्थक नहीं थे।वे उद्योगों के राष्ट्रीयकरण के पक्ष में भी नहीं थे।

गांधीजी ने अपने आदर्श राज्य या राम राज्य में आर्थिक विषमता दूर करने के लिए संरक्षता या न्यास सिद्धांत की बात कही। उन्होंने कहा कि यदि किसी व्यक्ति को उत्तराधिकार में भारी संपत्ति मिली है तो वह संपूर्ण संपत्ति वास्तव में उस व्यक्ति की ना होकर सारे समाज की है।अतः जिस व्यक्ति ने संपत्ति का संचय किया है वह स्वयं को संपत्ति का स्वामी ने समझकर ट्रस्टी समझे। इस तरह उन्होंने संरक्षता या न्यास सिद्धांत प्रस्तुत कर आर्थिक विषमता दूर करने का प्रयास किया।

गांधीजी मुख्य रूप से धार्मिक व्यक्ति थे। उनका आदर्श राज्य भी धर्म से प्रभावित था। एक धार्मिक नेता होते हुए भी गांधीजी अंधविश्वास में रुचि नहीं रखते थे। उनका दृष्टिकोण परोपकारी व मानवतावादी था। इनसे पूर्व मैकियावेली व हाब्स जैसे विचारको ने धर्म को राजनीति से अलग किया। लेकिन गांधी जी ने धर्म को राजनीति से जोड़ा। उनके अनुसार राज्य शासन समाज व आर्थिक संगठन सभी का मूलाधार धर्म ही है। गांधी जी के शब्दों में उस समय तक में धार्मिक जीवन व्यतीत नहीं कर सकता था जब तक कि मैं स्वयं को संपूर्ण मानवता के साथ एकीकृत न कर लेता और मैं यह उस समय तक नहीं कर सकता था कि जब तक कि राजनीति में भाग नहीं लेता। उनका कहना था कि मानवीय क्रियाओं से अलग रूप में धर्म का कोई

अस्तित्व नहीं है। गांधीजी के शब्दों में धर्म से पृथक राजनीति तो मृत्युजाल है क्योंकि यह आत्मा का हनन करती है ।इस तरह गांधीजी ने अपने राज्य में धर्म को राजनीति में समाहित करने की बात कही है।

अपने आदर्श राज्य या राम राज्य के अंतर्गत गांधीजी ने अस्पृश्यता को समाप्त करने की बात कही। उन्होंने कहा कि अस्पृश्यता हिंदू समाज में एक अभिशाप है अस्पृश्यता एक गुण है जो मनुष्य को अंदर ही अंदर खाए जा रही है। उन्होंने कहा कि अस्पृश्यता को समाप्त किए बिना स्वराज्य की कल्पना नहीं की जा सकती।अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए उन्होंने हरिजन शब्द का प्रयोग किया।इसी तरह उन्होंने स्त्री व पुरुष की समानता की बात कही। स्त्री त्याग व समर्पण की देवी है इतिहास में अनेक अवसर ऐसे भी आए हैं जब स्त्रियों ने पुरुषों को सहारा दिया है अतः स्त्री व पुरुष में अंतर नहीं करना चाहिए। गांधी जी ने उपदेश दिया कि राज्य में शराब बंदी लागू होना चाहिए कोई भी व्यक्ति शराब नहीं पीये और न ही जुआ खेले। अपने मन में कुविचारों को न आने दे। उन्होंने वसुधैव कुटुंबकम की भावना का प्रचार किया। वे इसके प्रबल समर्थक थे। उनका कहना था कि मानवता में कोई कमी नहीं आनी चाहिए मानवता की सेवा करना ही प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए।

निष्कर्ष-

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि महात्मा गांधी एक आदर्शवादी महापुरुष थे उनका आदर्श राज्य या रामराज्य राजा रामचंद्र की तरह संचालित राज्य था उनके आदर्श राज्य में वे सभी विशेषताएं थी जो राजा रामचंद्र की शासनकाल में थी। इसलिए कहा जाता है कि महात्मा गांधी का आदर्श राज्य या रामराज्य सभी व्यक्तियों को सुख समृद्धि पहुंचाने वाला राज्य था।

संदर्भ-

1- माय एक्सपेरिमेंट विथ द ट्रुथ, एमके गांधी पृ 591
2- भारतीय राजनीतिक चिंतन, डॉक्टर बी एल फडिया पृ 286
3- प्रमुख राजनीतिक विचारक, डॉ पुखराज जैन पृष्ठ 73
4- आधुनिक भारत का इतिहास, बीएल ग्रोवर पृष्ठ 332
5- आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन पृष्ठ297-312
6- गांधी धर्म और समाज, शंभू रतन त्रिपाठी पृष्ठ 37
7- सर्वोदय तत्व दर्शन, गोपीनाथ धवन पृष्ठ 74
8- भारतीय राजनीतिक विचारक, डॉक्टर कुमुद शर्मा पृष्ठ 180
9- भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास, डॉक्टर रामगोपाल शर्मा पृष्ठ 187

दिनेश कुमार मिश्र
असिस्टेंट प्रोफेसर प्रेम किशन खन्ना राजकीय महाविद्यालय जलालाबाद शाहजहांपुर.